डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, अयोध्या

श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ

पाठ्यक्रम एवं नियमावली

एम०ए०, जैनोलॉजी (जैन विद्या)

सत्र : 2019–2020 अनवरत्

12.4.2019

दूरभाष – 05278-245957
फैक्स – 05278-248123
E-Mail ID : registrarrmlfz@gmail.com
Website : www.rmlau.ac.in

डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०)

श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा एवं अथक प्रयास के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी द्वारा 29 सितम्बर 1994 को शासनादेश संख्या 375 सी0एम0/पन्द्रह (15)/94–95(2)/94 के अन्तर्गत डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिसर में श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ की स्थापना की गयी। तत्पश्चात् श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ के वर्तमान भवन का लोकार्पण दिनांक 16 अगस्त 1996 को वरिष्ठ आई0 ए0 एस0 श्री राय सिंह, सचिव, उच्च शिक्षा उ0प्र0 शासन के कर कमलों द्वारा किया गया। स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ द्वारा विषय विशेषज्ञों के निर्देशन में जैन धर्म एवं दर्शन तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर शोध एवं अनुसन्धान कार्य अनवरत किया जा रहा है।

भारतीय इतिहास, संस्कृति, जैन धर्म एवं दर्शन पर गहन अध्ययन एवं शोध कार्य हेतु श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ की स्थापना की गयी। शोध पीठ का मुख्य उद्देश्य जैन धर्म एवं दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर शोध को बढ़ावा देना तथा जैन धर्म एवं दर्शन के विभिन्न सिद्धान्तों एवं विचारों को जन–जन तक पहुँचाना है। अनुसन्धान एवं शोध की धारा सीधी ही नहीं बल्कि, कभी सीधी, कभी वक्राकार तथा कभी उतार चढ़ाव लिये होती है। संशय एवं समस्या का निराकरण ही शोध है, बशर्ते वह साक्ष्यों से प्रमाणित एवं तर्क संगत हो। आधुनिक भारत में जैन साक्ष्यों का बाहुल्य है और इनमें साहित्यिक, अभिलेखिक, मौद्रिक तथा कलात्मक सन्दर्भो को देखा जाना समीचीन है। यहाँ उल्लेखनीय है कि जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हैं, जिनमें सर्वाधिक नाम तीर्थंकर ऋषभदेव, पार्श्वनाथ तथा महावीर स्वामी का लिया

12.4.19

जाता है, क्योंकि इनकी तिथियॉ प्रमाणिक है। आवश्यकता है कि जैन धर्म के सभी तीर्थंकरों के कालक्रम निर्धारित किये जाय, उनके द्वारा प्रमाणित सिद्धान्तों एवं उपदेशों की गवेषणा की जाय तथा इनमें तारतम्यता स्थापित की जाय, जिससे इनकी प्रमाणिकता प्रबल हो और इस पर कोई प्रश्न चिन्ह न लगाया जा सके।

जैन धर्म एवं दर्शन विश्व विख्यात बहुमूल्य धर्म एवं दर्शन है। जैन धर्म के आदि तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव हैं, जिनका जन्म अयोध्या में अन्तिम कुलकर नाभिराज एवं उनकी महारानी मरूदेवी के यहॉ हुआ था। ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, शिल्प एवं वाणिज्य का उपदेश समाज के निर्माण के लिए दिया था। इनका विवाह यशस्वी एवं सुनन्दा के साथ हुआ था। इनके भरत एवं बाहुबली दो पुत्र तथा ब्राहमी एवं सुन्दरी दो पुत्रियॉ हुयी। जैन परम्परा एवं आदि पुराण के अनुसार भरत के नाम पर ही इस देश का नाम "भारत वर्ष" पड़ा और ब्राहमी के द्वारा ही ब्राहमी लिपि का उद्भव हुआ था। आदि पुराण में ही वर्णित है कि नीलांजना नामक नर्तकी की मृत्यु के पश्चात् ऋषभदेव को वैराग्य बोध हुआ और उन्होंने भरत को राजा बनाकर तप हेतु वन को प्रस्थान कर दिया।

जैन धर्म एवं दर्शन में एक तरफ आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित असि, मसि, कृषि, विधा, वाणिज्य एवं शिल्प का भारतीय समाज के निर्माण में अत्यधिक योगदान है, वहीं तीर्थंकर अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयान्सनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ, तथा महावीर स्वामी द्वारा दिये गये उपदेश क्रमशः सत्य, अंहिसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रहमचर्य जैन धर्म के मूलभूत उपदेश हैं, जिसकी आवश्यकता वर्तमान भारत में ही नहीं अपितु विश्व में भी एकता स्थापित करने के लिए है।

जैन दर्शन ज्ञान की सूक्ष्म व्याख्या करता है, जिसमें मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्याय एवं केवलिन ज्ञान आदि को सम्मिलित किया जाता है। यही नहीं ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुकर्म, अन्तराय कर्म एवं गोत्र कर्म आदि ज्ञानारोधक तत्व हैं। सम्पूर्ण

विश्व में जैन धर्म प्रथम है, जो जीव–अजीव का निरूपण करता है। अजीव के अर्न्तगत ही सर्वत्र परम सत्ता की व्याप्ति है। जैन दर्शन का स्याद्‌वाद सिद्धान्त, अनेकान्त, एवं सप्तभंगी नय के नाम से भी जाना जाता है । यह सिद्धान्त वैज्ञानिक तर्क की कसौटी पर खरा सिद्धान्त है । जैन चिन्तन में सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान, एवं सम्यक चरित्र मानव जीवन की आचार संहिता है और कहा जाय तो आचार संहिता की चरम परिणति भी है। जैन धर्म की इसी आचार संहिता को अपने जीवन मे उतार लेना ही जीवन की सार्थकता है।

जैन धर्म के प्रमुख प्रमेय–उत्पाद, व्यय एवं द्रव्य हैं। जैन धर्म यह मानता है कि सृष्टि अनादि है और ये जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, आकाश, एंव काल तत्व से मिलकर बनी हुई है। इन सभी तत्वों मे सामंजस्य एवं संचालन हेतु ही धर्म की आवश्यकता पड़ती है। मानव को पशु की श्रेणी से उन्नत जगत का सर्वोत्तम प्राणी बनाने का श्रेय धर्म को ही है। मनुष्य की सत्ता को स्वीकार कर उसे जितनी गरिमा जैन धर्म में प्राप्त हुई है, कदाचित् किसी अन्य धर्म में नहीं। जैन धर्म मनुष्य को ईश्वर तुल्य स्थान प्रदान करता है। जैन धर्म की मान्यता है कि मनुष्य के लिए जैन धर्म है, जैन धर्म के लिए मनुष्य नहीं।

भारतीय इतिहास में जैन धर्म के अनुयायी नन्द वंश एवं हाथी गुम्फा का खारवेल विख्यात है। इस समय तक जैन धर्म में श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय प्रकाश में आ चुके थे। श्वेत वस्त्र धारण करने वालों को श्वेताम्बर एवं दिशारूपी वस्त्र धारण करने वालों को दिगम्बर कहा गया । हाथीगुम्फा अभिलेख मे "नन्द राजनीत कंलिग जिनंसन्निवेश" का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक "जिन" प्रतिमा बनने लगी थी, किन्तु प्रतिमा निर्माण कला की प्राचीनता उस समय तक अभी प्रमाणित नही हो सकी है। ऐसा भी ऐतिहासिक साक्ष्यो में वर्णित है कि चन्द्रगुप्त मौर्य अन्तिम समय में "श्रवणबेलगोला" तक गया था और जैन धर्म का अनुयायी था। कौटिल्य द्वारा बनाया गया सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य अन्ततः जैनानुयायी कैसे हुआ, यह आज भी गहन शोध का विषय बना हुआ है।

जैन धर्म एवं दर्शन सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का आदर्श प्रस्तुत करता है। आधुनिक भारत में सहिष्णुता और एकता स्थापित करने तथा बैरभाव का उन्मूलन करने के लिए महाबीर

जैन धर्म एवं दर्शन सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का आदर्श प्रस्तुत करता है। आधुनिक भारत में सहिष्णुता और एकता स्थापित करने तथा बैरभाव का उन्मूलन करने के लिए महाबीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अंहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, एवं ब्रहम्चर्य सिद्धान्त को अक्षरशः स्वीकार करने की आवश्यकता है। भारतीय इतिहास, सस्कृति एवं कला में जैन धर्म का बहुमूल्य योगदान है और इस पर श्री ऋषभदेव जैन शोध पीठ, स्थापना से लेकर आज तक शोध सम्बन्धी कार्य करने की दिशा में सर्वदा प्रयासरत एवं अग्रसर है। इसीक्रम में वर्तमान में सहायक प्रोफेसर/शोध अधिकारी ऋषभदेव जैन शोधपीठ के निर्देशन में चार शोध छात्र शोध कार्य कर रहे है तथा एम0ए0 इन जैनोलॉजी (जैन विद्या) का पाठ्यक्रम खोलने हेतु प्रस्ताव निम्नवत् हैः—

पाठ्यकम का नामः—एम0ए0 जैनोलाजी (जैन विद्या)

पाठ्यकम अवधिः— 02 वर्ष (चार सेमेस्टर)

पाठ्यकम में प्रवेश हेतु अनिवार्य योग्यताः— स्नातक (कला संकाय)।

पाठ्यकम में सीटों की सॅख्याः— 20

शुल्क निर्धारणः— रू0 15000/— प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्षः— 14000/— रूपये

क0सं0	मद	शुल्क
1.	शिक्षण शुल्क	13200/—
2.	पुस्तकालय शुल्क	500/—
3.	छात्र काल्यण शुल्क	100/—
4.	काशनमनी (प्रथम वर्ष हेतु)	1000/—
5.	खेलकूद शुल्क	200/—

परीक्षा शुल्क :— प्रति सेमेस्टर शुल्क = 1000/—

नियमावलीः—

1. पाठ्यकम में उत्तीर्ण छात्र/छात्राओं को स्नातक की उपाधि प्रदान की जायेगी। उत्तीर्ण छात्र परास्नातक विषयों में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।
2. पाठ्यकम में परिवर्तन समय समय पर अध्ययन समिति एवं विद्या परिषद द्वारा किया जायेगा।
3. परीक्षा का माध्यम हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से होगा।
4. परीक्षा में सभी प्रश्नपत्रों में उत्तीर्ण होने के 36 प्रतिशत अनिवार्य है। परीक्षा की श्रेणी विश्वविद्यालय के नियमानुसार होगी।

12.4.19

5. परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए छात्र की प्रत्येक सेमेस्टर में 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी।
6. छात्रों को प्रत्येक सेमेस्टर में एक पेपर में बैक पेपर की सुविधा प्रदान की जायेगी यदि परीक्षार्थी चाहे तो एक वर्ष कि दोनों बैक पेपर की सुविधा एक सेमेस्टरों में भी ले सकता है।
7. विश्वविद्यालय द्वारा गोल्ड मेडल सभी सेमेस्टर में प्रथम प्रयास में सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्र को होगी।
8. प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा, जिसमें 50 अंक मिड सेमेस्टर की लिखित परीक्षा के आधार पर तथा 50 अंक सेमेस्टर के अन्त में बहुविकल्पीय परीक्षा द्वारा प्रदान किया जायेगा।

पाठ्यक्रम

एम0ए0 (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी (जैन विद्या)

प्रथम सेमेस्टर

1. प्रथम प्रश्न पत्रः जैनधर्म की प्राचीनता एवं स्वरुप –1 अंकः 50+50=100

इकाई 1– अध्ययन के स्त्रोत साहित्य एवं पुरातत्व।
इकाई 2– ब्राह्मण एवं श्रमण परम्परा।
इकाई 3 –श्रमण के उदय के कारण।

2. द्वितीय प्रश्न पत्रः जैनधर्म का इतिहास –1 अंकः 50+50=100

इकाई 1– जैनधर्म की प्राचीनता।
इकाई 2– तीर्थकर परम्परा।
इकाई 3–जैनधर्म का उद्भव एवं विकास–आदिनाथ, नेमिनाथ और पार्श्वनाथ के विशेष सन्दर्भ में।

3. तृतीय प्रश्न पत्रः तीर्थंकर महावीर एवं जैनधर्म–1 अंकः 50+50=100

इकाई 1– तीर्थकर महावीर।
इकाई 2– महावीर का दार्शनिक चिन्तन।
इकाई 3– महावीर की शिक्षाएं।

4. चतुर्थ प्रश्न पत्रः जैनधर्म एवं मीमांसा –1 अंकः 50+50=100

इकाई 1–जैनधर्म में तत्व मीमांसा।
इकाई 2–जैन धर्म में ज्ञान मीमांसा।
इकाई 3–जैनधर्म में कर्म मीमांसा।

5. पंचम प्रश्न पत्रः जैन तीर्थस्थलों का शैक्षणिक भ्रमण एवं रिर्पोट
अंकः 50+50=100

12.4.19

नोटः पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकेः–

1. जैन एवं बौद्ध धर्म, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा।
2. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, लेखकः– लाला हंसराज जैन।
3. आचारांगसूत्र : एक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 परमेष्ठी लाल जैन।
4. जैन योग का अलोचनात्मक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 अर्हददास बंडोबा।
5. जैन धर्म और तान्त्रिक साधना, लेखकः– डॉ0 सागरमल जैन।
6. जैन धर्म एक अनुशीलन, लेखकः– डॉ0 राजेन्द्र मुनि।
7. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण, लेखिकाः– श्री ज्ञानमती माता जी।
8. जैन दर्शन : एक विशलेषण, लेखकः– श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज।
9. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, लेखकः– श्री परमेश्वरी लाल गुप्त।
10. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप, लेखिकाः– डॉ0 सीमा रानी शर्मा।
11. जैन एवं बौद्ध साहित्य में वार्णित भूगोल, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा
12. हिन्दी जैन साहित्य का बृह्द इतिहास, लेखकः– डॉ0 शितिकंठ मिश्र।
13. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, लेखकः– डॉ0 हीरा लाल जैन।
14. जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 शिव प्रसाद।
15. भारत की जैन गुफाएँ, लेखकः– डॉ0 हरिहर सिंह।
16. जैन कला एवं स्थापत्य (विभिन्न खण्ड), लेखकः– श्री अमलानन्द घोष।
17. JAIN EPISTEMOLOGY, Writer:- Dr. Indra Chandra Shastri.
18. The Path Of Arhat Writer- T. U. Mehta.
19. Jaina Karmology, Writer:- Dr. N.L. Jain.
20. Studies In Jain Art, Writer:- Dr. U.P. Singh.
21. Concept Of Matter In Jaina Philosophy, Writer:- Dr. J.C. Sikadar.
22. Studies In Jaina Philosopy, Writer:- Dr. Nathamal Tatia.

एम0ए0 (पूर्वार्ध) जैनोलॉजी (जैन विद्या)

द्वितीय सेमेस्टर

1. प्रथम प्रश्न पत्रः जैन संघ –2 अंकः 50+50=100

इकाई 1– जैन संघ का विकास।

इकाई 2– जैनधर्म के विभिन्न सम्प्रदाय।

इकाई 3– दिगम्बर एवं श्वेतम्बर सम्प्रदाय।

2. द्वितीय प्रश्न पत्रः भारतीय संस्कृति के उन्नयन में जैन आचरण की भूमिका – अंकः 50+50=100

इकाई 1– जैन मुनि चर्या।

इकाई 2– आर्यिका चर्या (जैन साध्वी चर्या)।

इकाई 3– गृहस्थ आश्रम एवं संयम।

12.4.19

3. तृतीय प्रश्न पत्रः जैनधर्म का सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षणिक स्वरूप–2

अंकः 50+50=100

इकाई 1– जैनधर्म का सामाजिक पक्ष।
इकाई 2– जैनधर्म का आर्थिक पक्ष।
इकाई 3– जैनधर्म का शैक्षणिक पक्ष।

4. चतुर्थ प्रश्न पत्रः जैनधर्म एवं न्यायमीमांसा –2 अंकः 50+50=100

इकाई 1– न्याय विद्या की न्याययुत्कता।
इकाई 2– विभिन्न दृष्टियों की अपेक्षा न्याय व्यवस्था।
इकाई 3– जैन धर्म की अन्य धर्मो से तुलना (आजीविका एवं बौद्ध धर्म के विशेष सन्दर्भ में)।

5. पंचम प्रश्न पत्रः मौखिक परीक्षा

अंकः 100

नोटः पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकेः–

6. जैन एवं बौद्ध धर्म, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, लेखकः– लाला हंसराज जैन।
8. आचारांगसूत्र : एक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 परमेष्ठी लाल जैन।
9. जैन योग का अलोचनात्मक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 अर्हददास बंडोबा।
10. जैन धर्म और तान्त्रिक साधना, लेखकः– डॉ0 सागरमल जैन।
11. जैन धर्म एक अनुशीलन, लेखकः– डॉ0 राजेन्द्र मुनि।
12. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण, लेखिकाः– श्री ज्ञानमती माता जी।
13. जैन दर्शन : एक विशलेषण, लेखकः– श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज।
14. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, लेखकः– श्री परमेश्वरी लाल गुप्त।
15. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप, लेखिकाः– डॉ0 सीमा रानी शर्मा।
16. जैन एवं बौद्ध साहित्य में वार्णित भूगोल, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा
17. हिन्दी जैन साहित्य का बृहद इतिहास, लेखकः– डॉ0 शितिकंठ मिश्र।
18. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, लेखकः– डॉ0 हीरा लाल जैन।
19. जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 शिव प्रसाद।
20. भारत की जैन गुफाऐं, लेखकः– डॉ0 हरिहर सिंह।
21. जैन कला एवं स्थापत्य (विभिन्न खण्ड), लेखकः– श्री अमलानन्द घोष।
22. JAIN EPISTEMOLOGY, Writer:- Dr. Indra Chandra Shastri.
23. The Path Of Arhat Writer- T. U. Mehta.
24. Jaina Karmology, Writer:- Dr. N.L. Jain.
25. Studies In Jain Art, Writer:- Dr. U.P. Singh.
26. Concept Of Matter In Jaina Philosophy, Writer:- Dr. J.C. Sikadar.
27. Studies In Jaina Philosopy, Writer:- Dr. Nathamal Tatia.

12.4.19

पाठ्यक्रम

एम0ए0 (उत्तरार्ध) जैनोलॉजी (जैन विद्या)

तृतीय सेमेस्टर

1. प्रथम प्रश्न पत्रः जैन दर्शन एवं कर्म मीमांसा – 1 **अंकः 50+50=100**

2. इकाई 1– कर्मों की विविध अवस्थॉए।
3. इकाई 2– कर्म बन्ध की प्रकिया।
4. इकाई 3– आस्रव बंध।

2. द्वितीय प्रश्न पत्रः जैन तीर्थों का अध्ययन – 1 **अंकः 50+50=100**

इकाई 1– जैन तीर्थों की प्राचीनता।
इकाई 2– जैन तीर्थों का धार्मिक महत्व।
इकाई 3– जैन तीर्थों का वर्गीकरण एवं भौगोलिक विवरण ।

3. तृतीय प्रश्न पत्रः अंहिसा, अनेकांत एवं जैनदर्शन –1 **अंकः 50+50=100**

इकाई 1– अंहिसा : विश्वशांति का अमोघ उपाय।
इकाई 2– अनेकांत एवं स्याद्वाद : जैनदर्शन की अद्वितीय देन।
इकाई 3– जैनदर्शन में ज्योतिष विद्या।

4. चतुर्थ प्रश्न पत्रः जैन दर्शन के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण – 1
अंकः 50+50=100

इकाई 1– विभिन्न धर्म–दर्शन में आत्मा का स्वरूप।
इकाई 2– प्रमाण–नय मीमांसा।
इकाई 3– अंहिसा, अपरिग्रह एवं अनेकांत : विभिन्न दृष्टिकोण।

5. पंचम प्रश्न पत्रः लघुशोध प्रबन्ध **अंकः100**

12.4.19

नोटः पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकें:–

1. जैन एवं बौद्ध धर्म, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा।
2. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, लेखकः– लाला हंसराज जैन।
3. आचारांगसूत्र : एक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 परमेष्ठी लाल जैन।
4. जैन योग का अलोचनात्मक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 अर्हददास बंडोबा।
5. जैन धर्म और तान्त्रिक साधना, लेखकः– डॉ0 सागरमल जैन।
6. जैन धर्म एक अनुशीलन, लेखकः– डॉ0 राजेन्द्र मुनि।
7. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण, लेखिकाः– श्री ज्ञानमती माता जी।
8. जैन दर्शन : एक विशलेषण, लेखकः– श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज।
9. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, लेखकः– श्री परमेश्वरी लाल गुप्त।
10. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप, लेखिकाः– डॉ0 सीमा रानी शर्मा।
11. जैन एवं बौद्ध साहित्य में वार्णित भूगोल, लेखकः– डॉ0 देव नारायण वर्मा
12. हिन्दी जैन साहित्य का बृह्द इतिहास, लेखकः– डॉ0 शितिकंठ मिश्र।
13. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, लेखकः– डॉ0 हीरा लाल जैन।
14. जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन, लेखकः– डॉ0 शिव प्रसाद।
15. भारत की जैन गुफाऍं, लेखकः– डॉ0 हरिहर सिंह।
16. जैन कला एवं स्थापत्य (विभिन्न खण्ड), लेखकः– श्री अमलानन्द घोष।
17. **JAIN EPISTEMOLOGY, Writer:- Dr. Indra Chandra Shastri.**
18. **The Path Of Arhat Writer- T. U. Mehta.**
19. **Jaina Karmology, Writer:- Dr. N.L. Jain.**
20. **Studies In Jain Art, Writer:- Dr. U.P. Singh.**
21. **Concept Of Matter In Jaina Philosophy, Writer:- Dr. J.C. Sikadar.**
22. **Studies In Jaina Philosopy, Writer:- Dr. Nathamal Tatia.**

पाठ्यक्रम

एम0ए0 (उत्तराधं) जैनोलॉजी (जैन विद्या)

चतुर्थ सेमेस्टर

1. प्रथम प्रश्न पत्रः तीर्थंकर महावीर दिव्यध्वनि सार (चार अनुपयोगों में निबद्व जिनागम) – अंक:50+50=100

   इकाई 1– चरित्र निर्माण का पथ प्रदर्शक–चरणानुयोग।
   इकाई 2– शुद्वतम पथ प्रदर्शक–द्रव्यानुयोग।
   इकाई 3– जैन पंचमहाव्रत।

2. द्वितीय प्रश्न पत्रः जैन कला–2 अंक:50+50=100

   इकाई 1– जैन मूर्तिकला।
   इकाई 2– जैन चित्रकला।
   इकाई 3– जैन स्थापत्यकला

12.4.19

3. तृतीय प्रश्न पत्रः जैन प्रतिमा विज्ञान –2 अंक:50+50=100
   इकाई 1– जैन प्रतीक।
   इकाई 2– प्रारम्भिक मूर्तियॉं (आयागपट्ट) गुप्तकाल तक।
   इकाई 3– पूर्वमध्यकालीन मूर्तियॉं (1200ई0 तक)।

4. चतुर्थ प्रश्न पत्रः जैन दर्शन के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण –2 अंक:50+50=100
   इकाई 1– धर्म एवं विज्ञान से सम्बंधित महत्वपूर्ण विषय।
   इकाई 2– मोक्ष के साधन।
   इकाई 3– दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा।

5. पंचम प्रश्न पत्रः मौखिक परीक्षा। अंक:100

नोटः पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तके:–

6. जैन एवं बौद्ध धर्म, लेखक:– डॉ0 देव नारायण वर्मा।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, लेखक:– लाला हंसराज जैन।
8. आचारांगसूत्र : एक अध्ययन, लेखक:– डॉ0 परमेष्ठी लाल जैन।
9. जैन योग का अलोचनात्मक अध्ययन, लेखक:– डॉ0 अर्हददास बंडोबा।
10. जैन धर्म और तान्त्रिक साधना, लेखक:– डॉ0 सागरमल जैन।
11. जैन धर्म एक अनुशीलन, लेखक:– डॉ0 राजेन्द्र मुनि।
12. सामायिक एवं श्रावक प्रतिक्रमण, लेखिका:– श्री ज्ञानमती माता जी।
13. जैन दर्शन : एक विशलेषण, लेखक:– श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज।
14. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख, लेखक:– श्री परमेश्वरी लाल गुप्त।
15. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप, लेखिका:– डॉ0 सीमा रानी शर्मा।
16. जैन एवं बौद्ध साहित्य में वार्णित भूगोल, लेखक:– डॉ0 देव नारायण वर्मा
17. हिन्दी जैन साहित्य का बृहद इतिहास, लेखक:– डॉ0 शितिकंठ मिश्र।
18. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, लेखक:– डॉ0 हीरा लाल जैन।
19. जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन, लेखक:– डॉ0 शिव प्रसाद।
20. भारत की जैन गुफाऍं, लेखक:– डॉ0 हरिहर सिंह।
21. जैन कला एवं स्थापत्य (विभिन्न खण्ड), लेखक:– श्री अमलानन्द घोष।
22. JAIN EPISTEMOLOGY, Writer:- Dr. Indra Chandra Shastri.
23. The Path Of Arhat Writer- T. U. Mehta.
24. Jaina Karmology, Writer:- Dr. N.L. Jain.
25. Studies In Jain Art, Writer:- Dr. U.P. Singh.
26. Concept Of Matter In Jaina Philosophy, Writer:- Dr. J.C. Sikadar.
27. Studies In Jaina Philosopy, Writer:- Dr. Nathamal Tatia.

12.4.19